1

अपने समय के लिए परमेश्वर का जन

(1 राजाओं 19:14-21; 2 राजाओं 2:1-18)

एलिय्याह की सेवकाई ज़बर्दस्त थी। उसके प्रयासों के परिणामस्वरूप उत्तरी राज्य में बाल की पूजा पर बहुत बड़ी रोक लगी थी। जब अहाब का पुत्र याहोराम सिंहासन पर बैठा तो ''उसने अपने माता-पिता की बनवाई हुई बाल की लाठ को दूर किया'' (2 राजाओं 3:2ख)। तौभी जब तक इज़ेबेल जीवित रही, तब तक बाल की पूजा होती रही (देखें 1 राजाओं 16:31; 2 राजाओं 10:18-28)। अन्य बुराइयां भी थीं, जिनमें याहोराम द्वारा आरम्भ की गई मूर्तिपूजा में वापस जाना शामिल था (2 राजाओं 3:3)। ये समय अभी भी कष्टदायक थे। परमेश्वर को अभी भी इस्राएल में अपना जन चाहिए था।

अपने समय के लिए एलीशा परमेश्वर का जन था। वह एलिय्याह के जैसा प्रसिद्ध तो नहीं है, परन्तु इसके बावजूद वह भी एक अद्‌भुत व्यक्ति था। 2 राजाओं पढ़ें; एलीशा उस पुस्तक का नायक है। उस पुस्तक में राजाओं के जीवनों का नहीं बल्कि उसके जीवन का चित्रण था।

बाइबल में एलीशा के काम की लगभग बीस घटनाएं मिलती हैं। हम उसके जीवन का अध्ययन भविष्यवक्ता होने के लिए उसकी बुलाहट से आरम्भ करते हैं।

परमेश्वर द्वारा चुना व्यक्ति (1 राजाओं 19:14-21)

शिकायतें और उत्तर

एलीशा के बारे में पहली बार हम 1 राजाओं 19 में पढ़ते हैं। निराश हुआ एलिय्याह होरेब पहाड़ पर एक गुफ़ा में छिपा हुआ था। उसने करमेल पहाड़ पर बाल के नबियों को पराजित किया था, परन्तु उसे इस्राएल में कोई बदलाव नहीं नज़र आया। उसने परमेश्वर से चार शिकायतें कीं:

> मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, और तेरी वेदियों को गिरा दिया है और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है; और मैं ही अकेला रह गया हूं; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं (आयत 14)।

यहोवा ने एलिय्याह की शिकायतों का उत्तर एक-एक करके दिया। नबी ने पहले कहा, ''इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी'' परमेश्वर ने उससे ''अराम का राजा होने के लिए हजाय्येल का अभिषेक'' करने के लिए कहा (आयत 15)। अराम के राजा के रूप में हजाय्येल ने इस्राएलियों को दण्ड देना था।

एलिय्याह की दूसरी शिकायत थी कि यहोवा की वेदियों को गिरा दिया गया है। अहाब और इजेबेल ने यह घृणित कार्य कराया था। इसके उत्तर में परमेश्वर ने नबी को इस्राएल पर राजा होने

के लिए येहू का अभिषेक करने को कहा (आयत 16क)। येहू ने अहाब के वंश को नष्ट करना था और बाल की पूजा को समाप्त करना था।

तीसरा, एलिय्याह ने कहा कि इस्राएलियों ने ''[परमेश्वर के] नबियों को तलवार से घात किया है'' (आयत 14घ)। एक अर्थ में परमेश्वर ने कहा, ''तू उसकी चिंता मत कर। मैं उसकी भरपाई कर दूंगा।'' उसने एलिय्याह से ''अपने स्थान पर नबी होने के लिये आबेलमहोला के चापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक'' करने को कहा (आयत 16ख)।

एलिय्याह को दिए गए निर्देश एलीशा के लिए वैसी ही आज्ञा बन गए जैसे एलिय्याह को दी गई आज्ञा थी, इसलिए उन पर कुछ टिप्पणियां करना उचित है। आरम्भ करने के लिए, ''अभिषेक'' शब्द का मुख्यतया इस्तेमाल सांकेतिक अर्थ में हुआ है। अभिषेक करने का सामान्य ढंग सिर पर जैतून का तेल उंडेलना होता था; परन्तु जहां तक हमें मालूम है, केवल येहू ने ही वास्तव में अपने सिर पर तेल उंडेला था और यह एलिय्याह ने नहीं उंडेला था (2 राजाओं 9:1-6)। याद रखें कि ''अभिषेक करने का मूल विचार ... परमेश्वर की सेवा के लिए *अलग करना* था।''[1]

इसके अलावा उन तीन लोगों में से, जिन्हें एलिय्याह ने परमेश्वर की सेवा के लिए व्यक्तिगत रूप से अलग किया था एलीशा एक था। अन्य दो हजाय्येल और येहू को एलीशा और एलीशा के एक चेले द्वारा नियुक्त किया गया था (देखें 2 राजाओं 8:7-15; 9:1-10)। निम्न रेखाचित्र कार्य की एक कड़ी को दर्शाता है:

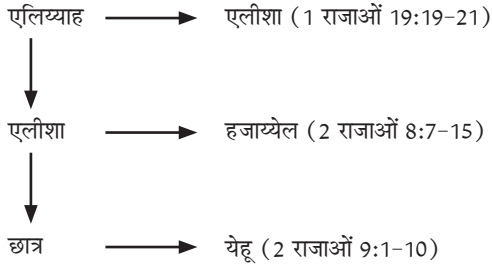

परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह सारा काम एलिय्याह ने किया। जब एलिय्याह के दास (एलीशा) ने हजाय्येल को नियुक्त किया तो यह ऐसा था जैसे उसे एलिय्याह ने नियुक्त किया हो। इसी प्रकार से, जब एलीशा के सेवक ने बाद में एलीशा की आज्ञा पर येहू को नियुक्त किया, तो यह ऐसा था जैसे स्वयं एलीशा ने यह किया हो। पुन: एक अर्थ में एलीशा के द्वारा यह काम एलिय्याह ने किया।

आइए होरेब पहाड़ पर एलिय्याह को परमेश्वर के उत्तर में वापस जाते हैं: ''और हजाय्येल की तलवार से जो कोई बच जाए उसको येहू मार डालेगा; और जो कोई येहू की तलवार से बच जाए उसको एलीशा मार डालेगा'' (1 राजाओं 19:17)। अपने अध्ययन के द्वारा, हम हजाय्येल और येहू के खूनी काम को देखेंगे। उनका काम शारीरिक होना था, जबकि एलीशा की सेवकाई मुख्यतया अपनी होनी थी। अधर्मी को ''मार डालने'' के लिए एलीशा को मुख्य ''हथियार'' ''आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है'' होना था (इफिसियों 6:17; देखें इब्रानियों

4:12)। इस वचन से आज्ञा न मानने वालों पर न्याय की घोषणा होनी थी।

एलिय्याह ने चौथी शिकायत की कि वह अकेला रह गया। परमेश्वर ने उसे आश्वासन दिया कि अभी ''इस्राएल में 7,000'' लोग हैं, जिन्होंने ''बाल के आगे घुटने'' नहीं टेके (1 राजाओं 19:18)। परमेश्वर के वचन से एलिय्याह की जान में जान आई। आयत 19 कहती है, ''तब वह वहां से चल दिया, ...।'' एक बार वह फिर से इस्राएल में परमेश्वर का जन हुआ!

चुनौती और प्रत्युत्तर

एलिय्याह ने परमेश्वर की अन्तिम आज्ञा (आयत 16ख) पहले मानी। वह उपजाऊ यरदन घाटी के उत्तरी सिरे में आबेल-महोला नामक नगर में उत्तर की ओर लगभग 150 मील चलकर गया। वह क्षेत्र में तब तक तलाश करता रहा जब तक ''शापात का पुत्र उसे मिला'' नहीं (आयत 19ख)। एलीशा के आरम्भिक जीवन के बारे में हम बहुत कम जानते हैं। उसका परिवार स्पष्टतया उन ''7,000'' लोगों में से होगा, जिन्होंने बाल की मूर्ति के सामने माथा नहीं टेका था। उसके माता-पिता ने उसका नाम ''एलीशा'' रखा, जिसका अर्थ है ''मेरा परमेश्वर उद्धार है'' या ''मेरा परमेश्वर बचाता है।''[2]

जब एलिय्याह ने पहली बार एलीशा को देखा तो वह हल जोत रहा था (आयत 19ग)। साढ़े तीन साल का सूखा अभी-अभी खत्म हुआ था (1 राजाओं 17:1; 18:1, 2, 41-45; देखें याकूब 5:17, 18), सो तीन साल बाद उनकी यह पहली उपज होगी! एलीशा ''बारह जोड़ी बैल अपने आगे किए हुए खुद बारहवीं के साथ होकर हल जोत रहा था'' (1 आयत 19:19घ)। शब्दों की रचना से यह संकेत मिलता है कि किसी न किसी प्रकार एलीशा अन्य ग्यारह हल चलाने वालों को निर्देश दे रहा था। यदि एलीशा के परिवार के पास बैलों की बारह जोड़ियां अपनी थी और उन्हें चलाने के लिए नौकर भी थे तो इसका अर्थ यह है कि वे धनवान थे।

इसके बाद होने वाला ''साक्षात्कार'' असामान्य है। स्पष्टतया एलिय्याह ने एलीशा से कुछ नहीं कहा। वह केवल उस जगह गया जहां वह था और ''अपनी चादर उस पर डाल दी'' (आयत 19ङ)। एलिय्याह की चादर चमड़े, बालों या अन्य खुरदरी सामग्री से बनी ओढ़नी ही थी। 2 राजाओं 2:8 में सप्तति (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) में ''चदर'' के बजाय ''भेड़ की खाल'' है। एलिय्याह ने अपनी चादर का इस्तेमाल वैसे ही किया जैसे मूसा अपनी छड़ी का इस्तेमाल करता था। चादर एलिय्याह के ''पद की पहचान'' और आश्चर्यकर्म करने का माध्यम बन गई थी।

दृश्य की कल्पना करें: एक दिन, जब एलीशा हल जोत रहा था, तो जंगली सा लगने वाला एक बूढ़ा आदमी न जाने कहां से प्रगट हो गया। उसने उसकी ओर देखा और अपनी चादर उतारकर, जो उसके कंधों के ऊपर एक खुरदरा सा कपड़ा होता था, उसके शरीर के पसीने से लबालब, उन रास्तों की धूल से भरा जिनमें से वह आया था, रात को सोने के लिए इस्तेमाल करने से थका हुआ। बिना कुछ कहे उसने वह चादर एलीशा के कंधों पर रख दी।

मुझे नहीं मालूम कि ऐसे अजीब काम के लिए मेरा क्या जवाब होता, परन्तु किसी प्रकार एलीशा को इस बात की समझ आ गई कि एलिय्याह क्या कर रहा है। शायद परमेश्वर ने उसे ईश्वरीय समझ दे दी थी। अधिक सम्भावना यह है कि एलीशा को एलिय्याह और उसकी प्रसिद्ध

चादर के बारे में पता था और उसे अच्छी तरह मालूम था कि इस प्रकार करने का क्या अर्थ है। बूढ़ा नबी एक अर्थ में यह कह रहा था कि ''मेरे पीछे हो ले, और मैं तुझे वैसे ही सम्भालूंगा जैसे तू अब मेरी चादर के नीचे है। मैं तुझे अपनी जगह देने के लिए प्रशिक्षित करूंगा।''

एलिय्याह एलीशा के ऊपर अपनी चादर डाल देने के बाद, मार्ग में चल दिया। एलीशा ने तुरन्त जवाब दिया। उसका मन सम्भवतया देश को खाने वाले आत्मिक कैंसर से दुखी था। ''तब वह बैलों को छोड़कर एलिय्याह के पीछे दौड़ा, और कहने लगा, मुझे अपने माता-पिता को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूंगा। उस ने कहा, लौट जा, मैंने तुझ से क्या किया है ?'' (आयत 20क)। अन्य शब्दों में, ''मैं जाने को तैयार हूं। बस एक मिनट मैं जाकर अपने माता-पिता को अलविदा कह दूं।''

एलीशा की इस विनती के लिए आलोचना की गई है। उसकी तुलना उस चेले से की गई है जो ''अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है'' (देखें लूका 9:61, 62)। 1 राजाओं 19 वाले एलीशा और लूका 9 वाले भावी चेलों में अन्तर उनके दिलों का है। लूका 9:57-62 वाले लोग बहाने बना रहे थे। एलीशा कोई बहाना नहीं बना रहा था; वह परमेश्वर की सेवा के लिए एलिय्याह के पीछे चलने के लिए अपना जीवन देने को गया था।

एलिय्याह ने उत्तर दिया, ''लौट जा, मैंने तुझ से क्या किया है ?'' (1 राजाओं 19:20ख)। इन शब्दों की व्याख्या अलग-अलग तरह से की गई है, परन्तु एलिय्याह स्पष्ट तौर पर एलीशा को अपने परिवार तथा मित्रों को अलविदा कहने के लिए लौटने की अनुमति दे रहा था। यह पूछकर कि ''मैंने तुझ से क्या किया है ?'' एलिय्याह यह कह रहा हो सकता है कि ''मैंने तुझे नबी होने के लिए बुलाया है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि तू अपने परिवार से हर प्रकार का नाता तोड़ ले। उन्हें बता दे कि तू क्या करने वाला है; तब मेरे पास आ जाना।''

> तब [एलीशा] उसके [अपने माता-पिता] पीछे से लौट गया, और एक जोड़ी बैल [जिसके साथ वह हल चला रहा था] लेकर बलि किए, और बैलों का सामान [लकड़ी का जूआ और शायद लकड़ी का हल] जलाकर उनका मांस पका के अपने लोगों को दे दिया, और उन्होंने खाया (आयत 21क)।

जहां मैं रहता हूं वहां हम कहेंगे कि एलीशा ने ''अपना पुल जला दिया।'' अब उसने किसान नहीं रहना था। क्योंकि उसके जीवन का यह भाग समाप्त हो चुका था। विदाई की दावत के बाद, ''वह कमर बान्धकर एलिय्याह के पीछे चला'' (आयत 21ख)।

एलीशा अगले दस या अधिक वर्षों तक आगे के काम के लिए अपने आपको तैयार करते हुए एलिय्याह के साथ चला। 2 राजाओं 2 तक दोबारा हमें एलीशा के बारे में पढ़ने को नहीं मिलता, परन्तु कुछ उपलब्ध विवरणों से मुझे यह विश्वास होता है कि एलीशा ने वही किया जो उसे करना था: ''मैं तेरे पीछे चलूंगा'' (आयत 20; देखें 2 राजाओं 2:2)। 1 राजाओं 20-2 राजाओं 1 को पढ़ते हुए नीचे दिए गए नाटकीय दृश्यों जैसे दृश्यों में एलीशा के एलिय्याह के पास होने की कल्पना करें:

- नाबोद की दाख की बारी में एलिय्याह का राजा अहाब से सामना (1 राजाओं 21)।

- एलिय्याह का राजा अहज्याह की ओर से भेजे गए सैनिक बल का सामना (2 राजाओं 1)।

परन्तु इस बात को समझ लें कि एलीशा एलिय्याह के साथ ''सहायक नबी या अधीन अधिकारी'' के रूप में नहीं चला। 1 राजाओं 19:21 के अनुसार एलीशा एलिय्याह की ''सेवा टहल'' करता था। एलीशा एक *सेवक* के रूप में चला। उसने एलिय्याह के लिए क्या किया? वह एलिय्याह की आवश्यकताओं का ध्यान रखता था, चाहे वह *जो भी* हों। 2 राजाओं 3:11 में एलीशा का विवरण एलिय्याह के हाथ धुलाने वाले के रूप में किया गया है जो एक घरेलू नौकर का काम है।

उन दस वर्षों के दौरान एलिय्याह अपने कार्य का प्रशिक्षण ले रहा था। बाद में नबियों के पुत्रों ने कहा, ''एलिय्याह में जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई है'' (2 राजाओं 2:15)। परन्तु एलीशा ने एलिय्याह की चादर उठाने और यरदन नदी पर मारने से बहुत पहले एलीशा ने एलिय्याह की आत्मा को अपनाना शुरू कर दिया था। खुले में नबी के साथ लम्बी, सर्दी की ठण्डी रातों में उसके साथ बिताते हुए उसमें एलिय्याह की आत्मा अपने अन्दर ले ली थी। उसने उत्तरी राज्य के धूल भरे मार्गों पर एलिय्याह के साथ चलते हुए सीखा था कि नबी होने का अर्थ क्या है।

परमेश्वर द्वारा स्वीकृत आदमी (2 राजाओं 2:1-18)

एक पुराना नबी घर जाता है

अन्त में परमेश्वर के लिए ''एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने का समय'' आ गया (2 राजाओं 2:1क)। ठहराए हुए दिन एलिय्याह गिलगाल से बेतेल तक और वहां से यरीहो तक गया (आयतें 1, 2, 4)। ये स्थान यहूदी इतिहास में स्मरणीय थे, परन्तु यह नबी ''उन्हें स्मरण करने के लिए'' नहीं गया। तीनों नगरों में नबियों की पाठशाला थी (देखें आयतें 3, 5; 4:38)। एलिय्याह वहां के छात्रों से मिलना चाहता होगा, जिससे उन्हें कठिन समयों में विश्वासयोग्य बने रहने की आज्ञा देता।

इन पाठशालाओं में रहने वालों को ''भविष्यवक्ताओं के पुत्र'' (2:3, 5, 7, 15)। ''भविष्यवक्ताओं के पुत्र'' यह नहीं है कि उनमें से हर किसी का पिता नबी था। ''के पुत्र'' इब्रानी भाषा से सम्बद्ध है, जिसका अर्थ ''के स्वभाव वाला'' हो सकता है। ये लोग सीखने वाले नबी थे। बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार एलिय्याह ने यह प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए थे। एलीशा ने अपनी पूरी सेवकाई के दौरान इन पाठशालाओं से निकट सम्बन्ध बनाए रखा।

एलिय्याह के समय में, अगले स्थान पर जाने से पहले हर बार वह एलीशा से कहता था, ''यहोवा मुझे [जगह का नाम लेकर] तक भेजता है इसलिए तूं यही ठहरा रह'' (आयत 2; देखें आयतें 4, 6)। हो सकता है कि एलिय्याह अकेलापन चाहता हो, परन्तु यह अधिक सम्भावना है कि उसकी बातें परीक्षा के रूप में हों (रूत 1:11-13 से तुलना करें)। हो सकता है कि एलिय्याह एलीशा को अपने आरम्भिक समर्पण से छूटने की पेशकश कर रहा हो। शायद वह कह रहा था, ''क्या तू अपनी शपथ पूरा करने के लिए पूरे मन से तैयार है? यदि हां तो आगे तेरे लिए परेशानी ही परेशानी है।'' एलिय्याह का उद्देश्य जो भी हो, एलीशा ने पीछे हटने से इनकार कर दिया।

हर बार उसका जवाब होता था, ''यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का'' (2 राजाओं 2:2, 4, 6)।

अन्त में यहोवा ने एलिय्याह को यरदन नदी पर भेजा (देखें आयतें 6, 7)। नबियों के पचास पुत्र दूर से एलिय्याह और एलीशा को देख रह थे (आयत 7)। ''एलिय्याह ने अपनी चदर पकड़कर ऐंठ ली, और जल पर मारा'' (आयत 8क)। जैसे मूसा ने लाल समुद्र पर अपनी लाठी मारी थी (निर्गमन 14:16, 21)। तुरन्त जल ''इधर-उधर दो भाग हो गया; और वे दोनों स्थल ही स्थल पार उतर गए'' (2 राजाओं 2:8ख), जैसे बहुत पहले यहोशू और उसकी सेनाओं ने यरदन नदी पार की थी (यहोशू 3:14-17)।

उनके नदी के पूर्वी किनारे पर जाने पर, एलिय्याह ने एलीशा से कहा, ''उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊं जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं वह मांग'' (2 राजा 2:9क)। एलीशा बहुत कुछ मांग सकता था परन्तु उसने कहा, ''तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए'' (2 राजा 2:9ख)। एलिय्याह ने साहस भरे विश्वास, निर्भय आज्ञापालन, निष्पक्ष न्याय और सबसे बढ़कर अपने परमेश्वर के प्रति पक्की निष्ठा की आत्मा दिखाई थी। परिस्थितियां चाहे जो भी हों, ''एलीशा ने कहा मुझे उस आत्मा का दोगुना भाग दे दे!''

''दोगुना भाग'' वाक्यांश कुछ परेशान करने वाला है। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि एलीशा ने अपने परामर्शदाता से दोगुनी शक्ति मांगी हो। वह सम्भवतया एलीशा का आत्मिक वारिस बनने की इच्छा जता रहा था। यहूदी व्यवस्था में, सबसे बड़े बेटे को विरासत का ''दोगुना भाग'' मिलता था (व्यवस्थाविवरण 21:17)। उस पुत्र पर अपने पिता का नाम और काम आगे बढ़ाने का जिम्मा होता था।

एलिय्याह ने उत्तर दिया, ''तू ने कठिन बात मांगी है'' (2 राजाओं 2:10क) उसने कहा था, ''जो कुछ चाहे कि *मैं* तेरे लिए करूं वह मांग'' और एलीशा ने ऐसा दान मांगा जिसे केवल *परमेश्वर* दे सकता था। तौभी एलीशा की विनती मान ली जानी थी यदि वह शर्त को पूरा कर देता। एलिय्याह ने कहा, ''यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिए ऐसा ही होगा; नहीं तो न होगा'' (आयत 10ख)। दस साल पहले परमेश्वर ने एलिय्याह की जगह नियुक्त करने के लिए एलीशा को चुना था (1 राजाओं 19:16)। परन्तु वह केवल तभी होना था यदि एलीशा एलिय्याह के पीछे चलने के अपने समर्पण में बना रहता (आयतें 20, 21)। उसके लिए अन्त तक उसके साथ रहना आवश्यक था।

एलिय्याह और एलीशा यरदन से पूर्व की ओर चले गए। अचानक, ''एक अग्नि मय रथ और अग्निमय घोड़े'' दिखाई दिए (2 राजाओं 2:11क)। यह केवल स्वर्गीय सेनाओं को दर्शाने का एक माध्यम है (देखें 2 राजाओं 6:17; भजन संहिता 104:4)। स्वर्गदूत एलिय्याह को घर ले जाने के लिए आए थे (देखें लूका 16:22)! रथ और घोड़ों ने दोनों को अलग कर दिया (2 राजाओं 2:11ख)। ज़ोर की आंधी और बवंडर आने लगा, परन्तु बवण्डर की उस धूल में एलीशा अपने स्वामी को अभी भी देख सकता था (आयत 12क)। तब ''एलिय्याह बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया'' (आयत 11ख)।

एलीशा पुकार उठा, ''और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और सवारो!'' (आयत 12ख)। उसके शब्द परमेश्वर की स्वर्गीय

सेना के लिए नहीं, बल्कि एलिय्याह के लिए थे (2 राजाओं 13:14 से तुलना करें)। एलिय्याह एक आदमी वाली परमेश्वर की सेना रहा था, ''असली इस्राएल का शक्तिशाली बचाने वाला और उनके लिए हर गौरवपूर्ण सैनिक से बढ़कर था।''[3]

एलीशा ने दोनों हाथों से अपने बाहरी वस्त्र का ऊपरी सिरा खींचकर वस्त्र को दो भाग कर दिया, जो बड़े शोक का चिह्न था (2:12घ; देखें उत्पत्ति 37:29; 2 शमूएल 13:19; अय्यूब 1:20; 2:12)। उसने एक बालक की तरह शोक किया कि उसका आत्मिक पिता उससे ले लिया गया था। उसने एक देशभक्त के रूप में भी शोक किया, क्योंकि इस्राएल के रथ और घुड़सवार चले गए थे।[4]

एक नया नबी काम पर जाता है

एलीशा ने उस जगह को देखा जहां एलिय्याह था। नबी की चदर भूमि पर पड़ी थी। एलिय्याह की बाकी सब चीज़ें उसके साथ उठा ली गई थीं, परन्तु उसकी चदर छोड़ दी गई थी। एलीशा चदर उठाकर यरदन की और लौट गया (2 राजाओं 2:13)। एलिय्याह का अन्तिम आश्चर्यकर्म उसका पहला आश्चर्यकर्म होना था।

एलीशा कीचड़ भरे नाले पर पहुंचा तो उसने चदर लपेटकर पानी पर मारते[5] हुए पुकारा, ''एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा कहां है?'' (आयत 14क)। एलीशा परमेश्वर के अस्तित्व पर संदेह नहीं कर रहा था वह यह पूछ रहा था, ''हे परमेश्वर क्या तू यही हैं? क्या मुझे दोगुना भाग मिला है या नहीं? क्या जल वैसे ही दो भाग होगा जैसे एलिय्याह के लिए होता था?''

यह हुआ! ''जब उस ने जल पर मारा, तब वह इधर-उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया'' (आयत 14ख)। परमेश्वर अभी भी था और शाक्तिशाली था अब वह एलीशा में काम कर रहा था। परमेश्वर के महान योद्धा की मृत्यु का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर मर गया है, इसका अर्थ केवल इतना है कि सेवक मरा है। जब तक पुरुष और स्त्रियां चदर उठाकर चलते रहेंगे तब तक परमेश्वर काम करता रहेगा!

नबियों के पुत्र यह सब देख रहे थे (आयत 7)। उन्हें पता नहीं था कि यह क्या हुआ। परन्तु उन्होंने एलिय्याह के पूर्व में जाने के समय उसके लिए यदरन नदी को दो भाग होते हुए देखा था और अब यह एलीशा के पश्चिम में आने पर उसके लिए दो भाग हो गई। वे केवल एक निष्कर्ष तक पहुंच पाए कि ''एलिय्याह में जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई है'' (आयत 15क)। एलीशा परमेश्वर द्वारा ठहराया हुआ एलिय्याह का उत्तराधिकारी था। वे अपने नये अगुवे से मिलने और उसके आगे झुकने के लिए भागे (आयत 15ख)।

परन्तु वे अभी भी उलझन में थे कि एलिय्याह को क्या हुआ। वह बूढ़ा नबी परमेश्वर के आत्मा द्वारा रहस्यमयी ढंग से इधर-उधर ले जाए जाने के लिए प्रसिद्ध था (1 राजाओं 18:12; प्रेरितों 8:39, 40 से तुलना करें)। उन्होंने एलीशा से कहा, ''सुन, तेरे दासों के पास पचास बलवान पुरुष हैं, वे जाकर तेरे स्वामी को ढूंढें, सम्भव है कि क्या जाने यहोवा के आत्मा ने उसको उठाकर किसी पहाड़ पर या किसी तराई में डाल दिया हो'' (2 राजाओं 2:16क)। एलीशा को मालूम था कि एलिय्याह को ढूंढ़ना समय बर्बाद करना होगा। पहले तो उसने न कर दी (आयत 16ख), परन्तु उसके हां कहने तक उन्होंने जिद्द नहीं छोड़ी (आयत 17क)। हम कहेंगे, ''उन्होंने

उसे बेबस कर दिया।''

वे तीन दिन ढूंढ़ते रहे (आयत 17ख)। जब वे यरीहो में लौट आए, तो एलीशा ने कहा, ''क्या मैं ने तुम से न कहा था, कि मत जाओ?'' (आयत 18)। उसकी डांट में ''मैंने तुम्हें बताया था'' का स्पर्श है, परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह अर्थ है कि ''यदि तुम मुझे अपना अगुआ मानते हो, तो तुम्हें मेरी बात मानना सीखना पड़ेगा!'' एलीशा कठिन समयों में अब यहोवा का आधिकारिक प्रतिनिधि था।

आदमी जिसकी परमेश्वर को आवश्यकता थी

ऊपरी भिन्नताएं

अगले पाठ में हम एलीशा की सेवकाई का अध्ययन आरम्भ करेंगे, परन्तु यह प्रस्तुति समाप्त करने से पहले में एलीशा और उसके पूर्वाधिकारी में तुलना करना चाहता हूं। इन दोनों व्यक्तित्वों में अधिक भिन्नता की कल्पना करना कठिन होगा।

- एलिय्याह जंगल की संतान था और रोयेंदार वस्त्र पहनता था। एलीशा किसान था और सामान्य वस्त्र पहनता था।[6]
- एलिय्याह संन्यासी था; उसे ढूंढ़ना कठिन था। एलीशा मिलनसार था; लोगों को उसकी आवश्यकता पढ़ने पर उसे ढूंढ़ने में कोई दिक्कत नहीं आती थी।
- एलिय्याह ''व्यवस्था से बाहर यानी अपने समय के राजनैतिक और सामाजिक ढांचे से बाहर'' काम करता था। एलीशा ''व्यवस्था के भीतर'' काम करता था।
- एलिय्याह परमेश्वर के न्याय के लिए जाना जाता था, जबकि एलीशा उसकी करुणा के लिए। एलिय्याह चमक और गरज था; एलीशा कोमल और गिरने वाली वर्षा थी। एलिय्याह चुंधियाने वाला प्रकाश था; एलीशा स्थिर, जलने वाली झाड़ी। एलिय्याह योद्धा की तीखी तलवार था; एलीशा चंगाई देने वाले की तेज़ छुरी।

इन दोनों नबियों के अलग-अलग व्यक्तित्व यह दिखाते हैं कि *परमेश्वर हर प्रकार के लोगों का इस्तेमाल कर सकता है*। एलिय्याह वह व्यक्ति था जिसकी परमेश्वर को उसकी पीढ़ी की आवश्यकता थी, जबकि एलीशा वह व्यक्ति था जिसकी परमेश्वर को उसके समय के लिए आवश्यकता थी। आज परमेश्वर के सेवकों का मूल्यांकन करते हुए हमें इस बात को समझना आवश्यक है। कुछ लोग बीते समय के उग्र प्रचारकों की मांग करते हैं। ऐसे लोगों का महत्व आज भी है, परन्तु हमें ''कोमल उत्तर'' देने वालों की भी आवश्यकता है जो ''गुस्सा ठण्डा'' कर सकते हों (देखें नीतिवचन 15:1)। बचाने वाली परमेश्वर की सामर्थ ऊंचे शोर में नहीं बल्कि उस शिक्षा में है जो ''ठोस'' हो (परमेश्वर के वचन के वफादार) (तीतुस 2:1, 8; देखें रोमियों 1:16)।

परमेश्वर की सेवा में अपनी क्षमता का मूल्यांकन करते हुए हमें इस सच्चाई को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। हमें अपनी उपयोगिता को इसलिए नहीं भूल जाना चाहिए कि हम दूसरों जैसे नहीं हैं। हो सकता है कि हमें दूसरों जैसे गुण या व्यक्तित्व न मिला हो, परन्तु हमें भी सामर्थ

दी गई है, जिसका इस्तेमाल हम कर सकते हैं। यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर *किसी का भी* जो उसकी सेवा के लिए तैयार हो और अपना जीवन उसे देता हो, इस्तेमाल कर सकता है।

आवश्यक समानताएं

हमने एलिय्याह और एलीशा में पाई जाने वाली असमानताओं को देखा है, परन्तु वे भिन्नताएं अधिकतर ऊपरी हैं। जो बात आवश्यक है वह यह है कि यहोवा और उसके मार्ग के प्रति जोशीले समर्पण में वे दोनों समान थे। एलीशा के इन गुणों पर विचार करें जो अपने समय के लिए परमेश्वर की आवश्यकता के अनुसार व्यक्ति था।

- उसे परमेश्वर में गहरा विश्वास था।
- वह परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था (2 राजाओं 4:9)।
- वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए उत्सुक था (1 राजाओं 19:19, 20)।
- वह अपने अतीत से सम्बन्ध तोड़ने को तैयार था (1 राजाओं 19:21)।
- वह सेवा करने को तैयार था (2 राजाओं 3:11)।
- तैयारी करने में दस साल लगने के बावजूद उसने छोड़ा नहीं। (कुछ लोग तुरन्त प्रतिफल, तुरन्त लाभ, तुरन्त सफलता चाहते हैं।)
- वह अन्त तक एलिय्याह के पीछे चलने के लिए किए गए अपने वचन को पूरा करने में वफ़ादार रहा, यहां तक कि तब भी जब उसे अलग करने की कोशिश की गई (2 राजाओं 2:2, 4, 6, 10-12)।
- उसने जिम्मेदारी ली, चाहे उसे मालूम था कि जिम्मेदारी लेना कितना महंगा हो सकता है। मूर्तिपूजक समाज में यहोवा का प्रतिनिधि होने से उसने प्रसिद्ध नहीं हो जाना था (देखें 2 राजाओं 2:23)। तौभी एलीशा ने परमेश्वर द्वारा उसके सामने रखी भूमिका स्वीकार की (1 राजाओं 19:16; 2 राजाओं 2:9)।

हम और गुणों को जोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिए हम देखेंगे कि एलीशा बड़े से बड़े व्यक्ति से लेकर छोटे से छोटे व्यक्ति तक हर प्रकार के लोगों में सचमुच दिलचस्पी लेता था। परन्तु यहां दिए गए गुण काफ़ी हैं। एक बार फिर मैं यह ज़ोर देता हूं कि परमेश्वर आप को अपनी सेवा में इस्तेमाल कर सकता है, आप का व्यक्तित्व और गुण चाहे जो भी हों ... *यदि* पहले आप अपना जीवन उसे दें।

सारांश

एक कहावत है: ''यह काम करना कठिन है।'' यह अभिव्यक्ति नाटिका के समय से ली गई है जब मंच पर एक के बाद एक मनोरंजन के नाटक दिखाए जाते थे। जब किसी विशेष नाटक को वाहवाही मिलती, तो अगले रंगकर्मी को मालूम होता था कि पिछले प्रदर्शन के बराबर न होने पर श्रोता परेशान हो जाएंगे। जब बहुत पसंदीदा प्रचारक किसी मण्डली में जाता है, तो उसकी जगह आए अगले प्रचारक को शीघ्र ही पता चल जाता है कि यह काम कितना ''कठिन'' है।

एलिय्याह ''की नकल करना कठिन काम'' था। उसकी सेवकाई में विशेषकर आश्चर्यजनक

काम थे। वह यहूदी लोगों का नायक बन गया। वे मसीहा के आने से पूर्व उसके वापस आने की उम्मीद करते थे (देखें मत्ती 17:10)। रूपांतर पर्वत पर वह मूसा और मसीह के साथ खड़ा था (मत्ती 17:3)।

जब ''कोई काम करना कठिन'' हो तो आप कह सकते हैं? आप वही करते हैं जो आप कर सकते हैं। आप उन दानों का इस्तेमाल करते हैं जो परमेश्वर ने आपको दिए हैं और फिर अपनी पूरी कोशिश करते हैं। एलीशा ने यही किया। वह एलिय्याह की धुंधली नकल नहीं था। वह अपने परामर्श दाता की मात्र परछाई, या केवल उसकी आवाज नहीं था। उसका अपना व्यक्तित्व था। वह ऐसा व्यक्ति था जिसकी परमेश्वर को आवश्यकता थी, कठिन समयों में परमेश्वर का जन और उसने अपने मिशन को पूरा किया। परमेश्वर किसी से भी इससे अधिक की मांग नहीं करता।

टिप्पणियां

[1]जोसेफ़ हैमंड, ''1 किंग्ज़,'' द पुलपिट कॉमैंट्री, अंक 5, 1 एण्ड 2 किंग्स, सम्पा. एच. डी. एम. सपैंस एण्ड जोसेफ़ एस. एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम . बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 463. [2]परमेश्वर का उद्धार, या ''परमेश्वर बचाता है'' सहित अन्य सम्भावनाएं सुझाई गई हैं। एलीशा के बारे में एक और बात जो हम जानते हैं वह यह है कि स्पष्टतया एलिय्याह की तरह वह भी अविवाहित था। [3]डोनल्ड जे. विस्मैन, 1 एण्ड 2 किंग्स: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैन्ट्री, टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कमैन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1993), 196. [4]हैनरी ब्लन्ट, लेक्चर्स ऑन द हिस्टरी ऑफ़ एलीशा (फिलाडेल्फिया: हरमन हूकर, 1839), 31. [5]एलिय्याह की चद्दर के बारे में हम यहां अन्तिम बार पढ़ते हैं। इस बात का कोई रिकॉर्ड नहीं है कि एलीशा ने फिर कभी इसका इस्तेमाल किया या नहीं। स्पष्टतया इसका उद्देश्य पूरा किया गया था। [6]इसका संकेत 2 राजाओं 12 में ''वस्त्र'' के लिए इब्रानी शब्द से मिलता है।